1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वीं जयन्ती 1824-2024
आर्य समाज 150 स्वर्णिम वर्ष मानव सेवा के 1875-2025

वर्ष 48, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 दिसम्बर, 2024 से रविवार 29 दिसम्बर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नववर्ष पर एक वैदिक चिन्तन

वैदिक संस्कृति और प्रकृति के अनुरूप चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही मनाएं नववर्ष

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी 1 जनवरी 2025 का दिन पश्चिम देशों की भांति भारत में भी अंग्रेजी नव वर्ष के रूप में मनाया जाना निश्चित है। इस दिन की पूर्व संध्या पर ही हमारी युवा पीढ़ी नाचेगी, गाएगी और खूब हो हुल्लड़ मचाएगी। 31 दिसंबर की रात 12 बजे तक कड़कड़ाती ठंडी रात में चारों तरफ शहरों में आतिशबाजी और अपने-अपने तरीकों से तथाकथित नए वर्ष का स्वागत करने के कार्यक्रम संपन्न होंगे। सोशल मीडिया पर एक दूसरे को मेसेज भेजकर बधाई का दौर तो कई दिन पहले शुरू हो जाएगा। लेकिन यह कोई नहीं सोचेगा कि वास्तव में नव वर्ष क्या होता है, कब होता है, क्यों होता है, इसको कैसे मनाएं, इस अवसर पर क्या विशेष करें? आदि के विषय में सोचने, विचारने की आवश्यकता किसी को भी नहीं है। और कोई क्यों सोचे कि नववर्ष क्या होता है? क्योंकि यह तो सबको पता ही है कि हर वर्ष नए साल का प्रारंभ 1 जनवरी को होता है, इसलिए बस नाचना है, गाना है, नशाबाजी करना है, हो हुल्लड़ मचाना है, देर रात तक जागना है, सुबह जागने के समय सोना है, यही लोगों का तथाकथित नववर्ष है और नववर्ष मनाने का तरीका भी यही गतिशील है।

अगर इस पर गहराई से विचार करें तो इसका तो यही अर्थ हुआ कि कोई मनुष्य रेलवे स्टेशन पर जाकर टिकट मास्टर से कहे की भाई, मुझे टिकट दे दो, और टिकट मास्टर उससे पूछे कि कहां की टिकट दूं, कहां जाना है आपको? तो वह व्यक्ति कहे कि भाई, इस बात से मुझे कुछ लेना-देना नहीं है कि जाना कहां है, क्यों जाना है, कहां की टिकट चाहिए, बस आप मुझे टिकट दे दो, मुझे तो जाना ही है, इसलिए कहीं की भी टिकट दे दो, जहां सब जा रहे हैं, वहीं मैं भी चला जाऊंगा। इसी तरह से नव वर्ष के रूप में 1 जनवरी को सेलिब्रेट करने वाले यह नहीं जानते कि हमारा नववर्ष कब है, नव वर्ष क्या होता है और नववर्ष को कैसे मनाया जाता है? बस नया वर्ष है, नया हर्ष है और उसको सेलिब्रेट करना है, नाचना गाना है, उल्टा सीधा खाना पीना है, मौज मनाना है, यही उनका नव वर्ष है और इसी तरह हमारी युवा पीढ़ी पश्चिमी प्रवाह में बहती जा रही है।

जीवन में नवीनता का वैदिक संदेश

वेद का सन्देश है कि हे मनुष्य, रोज नए मार्गों का निर्माण कर, इसका मतलब है कि प्रतिदिन कुछ नया करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए, जीवन को नवजीवन बनाने के लिए नई संभावनाएं, नई आकांक्षाएं, नई आशाएं, अपेक्षाएं मनुष्य के भीतर होनी ही चाहिए। क्योंकि नयापन सबको पसंद है, हमारा मन नित्य नई-नई कल्पनाएं करता है, मनुष्य को चाहिए कि अपने मन की झील और बुद्धि के सरोवर में उभरती हुई तरंगों को, कल्पनाओं को शुभ सात्विक बनाएं, जिससे जीवन में खुशियों का आगमन होता रहे, क्योंकि जैसी कल्पना होगी, वैसा ही तो जीवन होगा। .... इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं कि हम प्राचीन सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को भूल जाएं, अपनी संस्कृति, संस्कारों को त्याग दें, बल्कि हर पल, हर क्षण अपने मन को सुमन बनाने के लिए अपने पूर्वजों के दिखाए रास्ते पर नए उत्साह के साथ आगे बढ़ें, मानव सेवा और परोपकार के कार्यों को नए-नए तरीकों को अपनाते हुए आगे बढ़ाएं।

वैदिक मान्यता के अनुसार 1अरब, 96 करोड़, 8 लाख 53 हजार 125 वर्ष पूर्व सृष्टि का शुभारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही हुआ था, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी का राज्याभिषेक भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही हुआ था, 150 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन की थी, चेती चांद, उगाड़ी, गुड़ी पड़वा के रूप में इस दिन को विशेष महत्व दिया जाता है। क्योंकि यही वह समय होता है जिसमें ऋतुराज बसंत अपने यौवन पर होता है, प्रकृति में चहुं ओर नवीनता के दर्शन होते हैं, ना ज्यादा ठंड होती है और ना ही गर्मी का प्रभाव होता है, नदियों का जल भी स्वच्छ होता है, धरा पर खिले हुए रंग-बिरंगे फूल और हवाओं में भी खुशबू घुली हुई सी होती है, आसमान भी स्वच्छ नीला होता है और एक अलग तरह के उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियों का वातावरण स्वाभाविक ही होता है। उस समय ही विद्यार्थियों की नई कक्षाओं का आरंभ होता है और वित्तीय नए वर्ष का शुभारंभ भी तभी होता है, इस समय पर लोग अपने नए बही-खाते भी बनाते हैं और हर कार्य का शुभारंभ करना उचित माना जाता है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

समस्त आर्य संस्थाएं 200वीं जयन्ती की डाक टिकट
अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग करें

भारतीय डाक
India Post

यह डाक टिकट
ऑनलाइन
घर बैठे प्राप्त करें सम्पूर्ण भारत में
होम डिलीवरी की सुविधा
vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

डाक विभाग भारत सरकार द्वारा जारी
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती
स्मृति डाक टिकट

सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अत: समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे। आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha
A/c No. : 2009257009039 IFSC :CNRB0002009
Canara bank New Delhi Branch

देववाणी-संस्कृत

सत्य-प्रिय वाणी को प्रेरित और बुद्धि को जगानेवाली सरस्वती

वेद-स्वाध्याय

चोदयित्री सूनृताना चेतन्ती सुमतीनाम। यज्ञं दधे सरस्वती।।-ऋ० 1/13/11
ऋषिः - मधुच्छन्दाः।। देवता - सरस्वती।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ- सूनृतानाम् = सच्ची और प्यारी वाणी को **चोदयित्री** = प्रेरित करती हुई **सुमतीनाम्** = और अच्छी बुद्धियों को **चेतन्ती** = चेताती हुई **सरस्वती** = सरस्वती **यज्ञम्** = यज्ञ को **दधे** = धारण किये हुए है।

विनय- जिन्होंने अपने जीवन को यज्ञ बनाया है वे जानते हैं कि इस जीवन-यज्ञ को जहाँ अन्य (परमेश्वर के शक्तिरूप) देवों ने धारण कर रखा है, वहाँ सरस्वती देवी ने भी इसे धारण किया हुआ है। यह देवी दो कार्य कर रही है। यह एक तो 'सूनृता' वाणी को प्रेरित करती है दूसरी, सुमतियों को जगाती रहती है। सूनृता उस वाणी का नाम है, जो सच्ची और प्यारी होती है। केवल प्रिय वाणी तो किसी काम की है ही नहीं, किन्तु केवल सच्ची वाणी बोलना भी अधूरा है। सत्य के साथ वाणी में अहिंसा भी रहे तभी वाणी पूरी होती है और तब वाणी में प्रेम भी आ जाता है। सरस्वती देवी हम लोगों में ऐसी सत्यमयी और मधुर वाणी को प्रेरित करती रहती है। इस कारण हमारा जीवन-यज्ञ अभग्न चलता है। इसके अतिरिक्त यह सरस्वती देवी इस यज्ञ के एक अन्य ऐसे गहरे और सूक्ष्म अङ्ग को भी निभाती है, जब यह हममें श्रेष्ठ, सुन्दर, कल्याणकर वुद्धि (ज्ञान) को निरन्तर जगाती है। जब जीवन-यज्ञ ठीक चल रहा होता है तो अन्दर सरस्वती देवी हममें शुभ, सबकी कल्याणकारिणी, हितकारी वुद्धियों को ही उत्पन्न करती हुई और हमारी वाणी से सच्चे और प्रेममय वचनों का ही प्रवाह बहाती हुई होती, अत: जब कभी हमारे मन में कोई दुर्मति उत्पन्न हो, हमारा मन किसी के लिए अहित व अनिष्ट सोचे तो समझ लो कि सरस्वती देवी ने हमें छोड़ दिया है। जब कभी हम अनृत या कठोर (हिंसक) वचन बोलें तो समझ लो कि सरस्वती देवी हमारे जीवन की यज्ञशाला से उठ गई है। हमें फिर सुमति और सुनृता वाणी का सङ्कल्प करके अपने हृदयासन में सरस्वती देवी को बिठलाना चाहिए और इस यज्ञ-भंग के लिए प्रायश्चित करना चाहिए।

हम प्राय: समझते हैं कि सरस्वती देवी का प्रसाद पढ़ना-लिखना आ जाना है, परन्तु ऐसा नहीं है। यदि किसी के हृदय में निरन्तर सुमति की धारा बहती हो और उसकी वाणी से सत्यमय और मधुर वचनों का ही अमृत झरता हो तो वह मनुष्य चाहे बिल्कुल निरक्षर हो, तो भी उसमें निश्चय से सरस्वती का वास है, जो उसके जीवन-यज्ञ को धारे हुए चला रही है।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पांच दशक से जारी - अरब की जंग कब तक चलेगी?

सीरिया में सुन्नी गुटों ने राजधानी दमिश्क पर कब्जा जमा लिया है। सीरिया में 27 नवंबर को विद्रोही गुटों और सेना के बीच लड़ाई शुरू हुई था। विद्रोही लड़ाकों ने एक-एक कर 4 शहर जीतने के बाद 8 दिसंबर को राजधानी दमिश्क पर भी कब्जा कर लिया। इसके साथ ही सीरिया में 5 दशक से जारी शिया समुदाय से आने वाले असद परिवार के साम्राज्य का अंत हो गया है।

सीरिया में सत्ता परिवर्तन को कई तरीकों से देखा गया, कुछ के अनुसार यह पश्चिमी देशों की साजिश है। कुछ ने तेल के कुओं पर कब्जे की जंग बताया तो कई लोगों के अनुसार यह एक तानाशाह का अंत है। लेकिन यहाँ सवाल है कि सन 624 की बद्र की जंग हो या सन 632 में मोहम्मद की मृत्यु के बाद चली जंग, उस समय ना पश्चिमी ताकत थी और ना तेल, ना ही ये युद्ध किसी तानाशाही को लेकर था, तब इस युद्ध का आधार क्या था? जाहिर सी बात है, दोनों के रीति-रिवाज, रहन-सहन, धार्मिक मान्यताएं थी। इसके दो उदाहरण नहीं है (पाकिस्तान में आज भी शिया और सुन्नी विवाद ज्यों का त्यों जमा हुआ है। सुन्नी बहुसंख्यक इस देश में शियाओं पर हमले होने और उनकी मस्जिदें गिरा देने की खबरें अक्सर आती रहती हैं।

ईरान हो या सऊदी अरब, लेबनान हो या इराक, यहाँ तक कि यमन में लंबे कालखंड से संघर्ष छिड़ा हुआ है। यहां करीब 60 प्रतिशत सुन्नी और 40 प्रतिशत आबादी शिया है। यह देश पिछले कई सालों से अस्थिर हैं। यहां के अधिकांश इलाकों पर शिया हूती विद्रोहियों का कब्जा है। इसे ईरान का समर्थन मिलता है, जबकि सऊदी अरब, यमन सरकार का साथ देता है।

सीरिया में भी शिया-सुन्नी विवाद चल रहा था। वहां की बहुसंख्यक आबादी सुन्नी है जबकि शासन शिया चला रहे हैं। इस वजह से पिछले 12 सालों से वहां जंग चल रही है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े के मुताबिक 5 लाख से ज्यादा लोग इस संघर्ष में मारे गए हैं और 50 लाख से भी ज्यादा लोगों को अपना देश छोड़ना पड़ा है।

एक बार अमेरिकी पत्रकार डेनियल ने लिखा था कि उग्रवादी इस्लाम इसी इस्लाम से निकला है, जो एक मानवद्रेषी, स्त्रीद्वेषी, विजयवादी, सहस्राब्दिवादी, आधुनिकता विरोधी, ईसाई, हिन्दू, बौद्ध विरोधी, यहूदी विरोधी, आतंकवादी, जिहादी और आत्मघाती संस्करण है। सौभाग्य से, यह केवल 10 प्रतिशत से 15 प्रतिशत मुसलमानों को ही आकर्षित करता है, लेकिन 85 प्रतिशत का इन्हें गुपचुप समर्थन जरूर प्राप्त है।

साल 2020 में फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रों ने जब यह कहा कि इस्लाम संकट में है, तो सभी मुस्लिम देश भड़क गए थे। तुर्की के रेसेप तैयब एर्दोगन ने उन्हें अपने दिमाग की जांच करवाने की हिदायत दे दी। पाकिस्तान के इमरान खान ने मुस्लिम मुल्कों के लिए दो पन्नों का उपदेश जारी कर दिया कि वे पश्चिम को इस्लाम के बारे में फिर से शिक्षित करें और मलेशिया के 95 वर्षीय महातिर मौहम्मद ने तो सारी हदें तोड़ डाली। वे इतने नाराज हो गए कि फ्रांसीसियों ने अतीत में मुसलमानों के साथ जो भी किया, उसके लिए उनकी सामूहिक हत्या को उन्होंने जायज बता दिया और पश्चिम के पतन की निंदा करते हुए कहा कि पश्चिम तो सिर्फ 'नाम का ही ईसाई है। वहां तो औरतें प्राय: अपने गुप्त अंगों को महज एक धागे से ढककर घूमती नजर आती हैं।' इसके अलावा फ्रांस के विरोध में पाकिस्तान, बांग्लादेश और भारत में विरोध प्रदर्शन होने लगे। लेकिन सवाल यह था कि क्या मैक्रों ने सच कहा या नहीं? इन ताकतवर और बड़ी आबादी वाले देशों के प्रमुख नेताओं की प्रतिक्रियाएं संकट की ओर ही संकेत करती हैं। अगर दुनियाभर के करोड़ों मुसलमानों को यह लगता है कि

ईरान हो या सऊदी अरब, लेबनान हो या इराक, यहाँ तक कि यमन में लंबे कालखंड से संघर्ष छिड़ा हुआ है। यहां करीब 60 प्रतिशत सुन्नी और 40 प्रतिशत आबादी शिया है। यह देश पिछले कई सालों से अस्थिर हैं। यहां के अधिकांश इलाकों पर शिया हूती विद्रोहियों का कब्जा है। इसे ईरान का समर्थन मिलता है, जबकि सऊदी अरब, यमन सरकार का साथ देता है।

सीरिया में भी शिया-सुन्नी विवाद चल रहा था। वहां की बहुसंख्यक आबादी सुन्नी है जबकि शासन शिया चला रहे हैं। इस वजह से पिछले 12 सालों से वहां जंग चल रही है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े के मुताबिक 5 लाख से ज्यादा लोग इस संघर्ष में मारे गए हैं और 50 लाख से भी ज्यादा लोगों को अपना देश छोड़ना पड़ा है।

उन्हें इस्लाम का विरोध करके निशाना बनाया जा रहा है, जबकि गौर से देखें तो सब कुछ इसका उलटा है।

बेशक मत सम्प्रदाय का राजनीतिकरण होता आया है, लेकिन इसमें दो राय नहीं है कि इस्लाम का सबसे ज्यादा राजनीतिकरण हुआ है। इसका उदाहरण अलकायदा, आईएसआईएस, तालिबान, खुरासान, इमाम अली ब्रिगेड, हिजबुल्लाह, हूती या हमास जैसे संगठन आस्था के आधार पर राजनीतिक तौर पर सत्ता हासिल कर रहे हैं। हाल की सीरिया फतेह में किसी देश की सेना नहीं, बल्कि आतंकी गुट हयात तहरीर अल-शाम का हाथ रहा।

आप मिडिल ईस्ट के किसी भी देश में चले जाइए, आपको लोकतंत्र न सुनाई देगा न दिखाई देगा। अमीर, किंग, तानाशाह,, सैनिक तानाशाह ही आपको दिखाई देंगे। गौर करने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि करीब 60 प्रतिशत मुस्लिम एशिया में हैं और दुनिया में वे जिन चार देशों - भारत, इंडोनेशिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान - में सबसे बड़ी आबादी में हैं, इन देशों में लोकतंत्र किसी-न-किसी अनुपात में जरूर मौजूद है। इसी तर्क को आगे बढ़ाते हुए कहा जा सकता है कि जिन देशों में मुस्लिम बहुमत में हैं, वहां धर्मनिरपेक्षता को एक बुरा शब्द, एक पश्चिमी विचार माना जाता है। पाकिस्तान और बांग्लादेश में थोड़ा बहुत सीमित दिखावे का लोकतंत्र है, किंतु धर्म निरपेक्षता यहाँ बुरा शब्द माना जाता है।

इसके विपरीत जिन लोकतांत्रिक देशों में मुस्लिम अल्पसंख्यक हैं, वहां वे उस गणतंत्र की धर्म निरपेक्षता को हमेशा कसौटी पर चढ़ाए रखते हैं। फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका, बेल्जियम, जर्मनी इसके अच्छे उदाहरण हैं। 1919-24 में कमाल अतातुर्क ने ऑटोमन की खिलाफत को खत्म करते हुए जब तुर्की में गणतंत्र की स्थापना की। किंतु आज तुर्की अपने उसी दौर में वापस जा चुका है जहाँ से उसे निकालकर लाया गया है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

परिवर्तन – पुस्तक के पीछे लेखक के मनोभाव

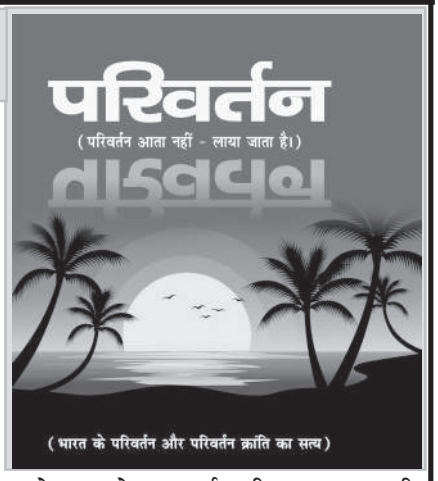

हम कभी भी आर्य समाज या महर्षि दयानन्द जी की बात किसी से करते थे तो व्यक्ति एकदम से अपने मन में जो छवि आर्य समाज या ऋषि दयानन्द जी की होती थी, वह बता दिया करते थे' अच्छा-अच्छा वही आर्य समाज जहां शादियां होती हैं', आर्य समाज के बारे में उनकी जो अगली जानकारी होती थी वह थी 'आर्य समाज राम और कृष्ण को नहीं मानता' और तीसरी जानकारी जो उनके मन में रहती थी वह थी कि 'आर्य समाज भगवान को भी नहीं मानता'। मुझे भी सोचकर हैरानी होती थी कि आखिर किन कारणों से उनकी यह अवधारणा बनी, हमारे कार्यों को देखकर या फिर केवल किसी के कहे में आकर, क्योंकि राम और कृष्ण के आदर्शों के विपरीत तो आर्य समाज का एक भी सिद्धान्त नहीं, वरन उनके सिद्धान्तों पर ही चलता रहा है आर्य समाज। वे आर्य पुत्र कहलाते थे, हम भी स्वयं को आर्य लिखते हैं और स्वयं को आर्यों की संतान मानते हैं। वे भी वेद को मानते थे, हम भी वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकारते हैं। वे भी नित्य यज्ञ करते थे, हम भी नित्य यज्ञ को ही प्रोत्साहन देते आए और करते भी हैं।

कुछ लोग कृष्ण को गोपियों संग नाचने वाला, रास रचाने वाला, रसिया मानते हैं, हम तो उनको 16 कला सम्पूर्ण महानतम व्यक्तित्व स्वीकार करते हैं, दयानन्द जिनके अपमान से सबसे ज्यादा दु:खी होते हैं वह कृष्ण ही तो हैं, उनके अपमान के लिए दु:ख मिश्रित क्रोध करने से भी दयानन्द कभी नहीं चूके, तो फिर भला आर्य समाज के विषय में यह भ्रांति क्यों?

निश्चित ही ये गलतफहमी अपने आप पैदा नहीं हुई, किसी के डालने से ही हुई, तो किसी ने आखिर ऐसी भ्रांति क्यों पैदा की? आखिर इसके पीछे किसी का क्या स्वार्थ था? यह तो हम जनता की राय पर ही छोड़ते हैं।

अगर बात करें ईश्वर की मान्यता की, तो हैरानी इस बात पर होती है कि जो दयानन्द परम ईश्वर भक्त थे और सच्चे शिव (ईश्वर) की खोज के चलते ही अपना सब कुछ त्याग करके नितांत अकेले विराट साधना के लिए निकल पड़े, ईश्वर के स्थान पर अन्यों की पूजा को देखकर दु:खी हुए और अपने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम सम्मुलास उस एक सर्व शक्तिमान ईश्वर की उपासना, परिचय और प्रशंसा में ही स्थापित कर दिया, जिस ईश्वर की ऊर्जा से ही वह कंटकाकीर्ण पथ को पार कर सके, किसी से नहीं डरे, उसी ईश्वर को विनय, प्रार्थना, उपासना के लिए एक शानदार ग्रंथ की रचना को 'आर्याभिविनय' और अपना सारा जीवन एक निराकार व्यापक सृष्टिकर्ता ईश्वर की स्थापना करने हेतु समर्पित कर दिया, भला उन्हें और उनके करोड़ों अनुयायियों को ईश्वर व भगवान को न मानने वाला कहें तो इससे बड़ा दु:ख भला और क्या होगा? हमने निष्कर्ष निकाला है कि कोई समूह जान-बूझकर आर्य समाज के विषय में नाना प्रकार के विष घोलता रहा है। (जिसमें मुख्य मुस्लिम धर्मगुरु, ईसाई भी शामिल हैं) जिनका मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं में फूट डालना रहा है।

उसके पीछे एक और कारण था, वही सज्जन जो उपरोक्त तीन-चार बातें बताते हैं, उनको आर्य समाज के और दयानन्द के जीवन और उनके महान् कार्यों और आन्दोलन के बारे में बिल्कुल भी नहीं पता। इसका मतलब स्पष्ट था कि हो ना हो, यह किसी बड़े षड्यंत्र का ही परिणाम हो। अगर उन्हें अच्छे और महान् कार्यों का भी पता होता और आर्य समाज से कुछ बातों पर उनकी असहमति होती, तो दिक्कत नहीं थी, पर यहां तो पूरा का पूरा ही उल्टा हुआ रखा था। उन्हीं बातों को सोचकर प्रस्तुत पुस्तक लिखने का मन हुआ, ताकि जो छिपा इतिहास है वह सबको पता चल सके। साथ ही कुछ बातें और थी, जिनको स्पष्ट करने के लिए भूमिका बनाने की आवश्यकता थी। जैसे आजादी के आंदोलन में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी के योगदान को लेकर हमेशा चर्चा रही, आज उसकी वास्तविकता के धरातल को बताना बेहद आवश्यक लगा। मनुस्मृति एक विवादित ग्रंथ के रूप में चर्चित किया गया है, मनुस्मृति वैदिक है और यह समाज में विघटन नहीं बल्कि उन्नति और एकता का मार्ग दिखाता है, पर आज सामान्य जनता इसके बारे में क्या सोचती है, ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति के उदाहरण देकर अपने महान् ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की तो उसमें मनुस्मृति को भला नकारा कैसे जा सकता है। *– क्रमश:*

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

स्वास्थ संदेश

हींग एक औषधि – उपचार और प्रयोग

हींग कोई फल या फूल नहीं होती, यह तो पेड़ के तने से निकली हुई गोंद होती है। इसका पेड़ 5 से 9 फीट ऊँचा होता है। इसके पत्ते 1 से 2 फीट लम्बे होते हैं। हींग को हम रोज खाने का जायका बढ़ाने के लिए सब्जियों में डालते हैं। इससे खाना तो टेस्टी बनता ही है साथ ही ये पेट के लिए भी अच्छा रहता है। हींग (Asafoetida) का प्रयोग हम मुख्य तौर पर खाने में मसाले के रूप में ही करते हैं। हींग को खाने के स्वाद को बढाने के साथ-साथ कई तरह के घरेलू नुस्खों में भी प्रयोग किया जाता है। हींग को दाल और रायते में छौंक लगाने में भी प्रयोग किया जाता है।

हम हींग से होने वाले फायदों के बारे में बात करेंगें क्योकि हींग में बहुत से लाभदायक गुण पाये जाते है-

1- हींग अपच, पेट दर्द, जी मिचलाना, दांत दर्द, जुकाम, खांसी, सर्दी के कारण सिरदर्द, बिच्छू, बर्र आदि के जहरीले प्रभाव और जलन को कम करने में काम आती है। ये ऐसे गुण है जो शायद ही कुछ ही लोगों को पता होंगे।

2- यदि कभी आपको अचानक से पेट दर्द होने लगे तब थोड़ी सी हींग को पानी में घोलकर हल्का सा गर्म करके नाभि तथा इसके आसपास लेप लगायें, ऐसा करने से पेट दर्द में तुरंत ही आराम मिल जायेगा। नाभि के आस पास गोला में इस पानी का लेप करने से पेट दर्द, पेट फूलना व पेट का भारीपन दूर हो जाता है।

3- दांत दर्द की समस्या होने पर हींग में थोड़ा सा कपूर मिलाकर दर्द वाली जगह पर लगाने से दांत में दर्द होना बंद हो जाता है।

4- कान में दर्द होने पर तिल के तेल में हींग को पकाकर उस तेल की बूंदों को कान में डालने से कान का दर्द समाप्त हो जाता है।

5-पीलिया होने पर हीग को गूलर के सूखे फलों के साथ खाना चाहिए। पीलिया होने पर हींग को पानी में घिसकर आंखों पर लगाने से फायदा होता है।

6- अपने रोज के खाने में दाल, कढ़ी और सब्जियों में हींग का प्रयोग करने से खाने को पचने में सहायता मिलती है।

7- हींग की मदद से शरीर में ज्यादा इन्सुलिन बनता है और ब्लड शुगर का स्तर नीचे गिरता है। ब्लड शुगर के स्तर को घटाने के लिए हींग में पका कड़वा कद्दू खाना चाहिए।

8- हींग में कोउमारिन होता है जो खून को पतला करने में मदद करता है और इसे जमने से रोकता है। हींग बढ़े हुए ट्राइग्लीसेराइड और कोलेस्ट्रोल को कम करता है और उच्च रक्तचाप को भी घटाता है।

9- छाछ में या भोजन के साथ हींग का सेवन करने से अजीर्ण वायु, हैजा, पेट दर्द, आफरा में आराम मिलता है।

10- हींग में वह शक्ति होती है जो कर्क (कैंसर) रोग को बढ़ावा देने वाले सेल को पनपने से रोकता है।

11-अगर किसी खुले जख्म पर कीडे पड़ गए हों तो, उस जगह पर हींग का चूर्ण लगाने से कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

12- हींग के चूर्ण में थोडा सा नमक मिलाकर पानी के साथ लेने से लो ब्लड प्रेशर में आराम मिलता है।

13- बच्चों के पेट में कीडे होने पर जरा सी हींग एक चम्मच पानी में घोलकर रूई के फाहे को उसमें डुबोकर बच्चे के पॉटी होल में रख दें इसके बाद जब बच्चा पॉटी करेगा तो सारे कीड़े मर कर पॉटी के साथ निकल जाएंगे। यदी बड़ो के पेट में भी कीड़े हो जाए तो ये उपाय वो भी अपना सकते हैं।

14- यदि आपके शरीर के किसी जगह पर कांटा चुभ गया हो तो उस जगह पर हींग का घोल लगा दें, ऐसा करने से काँटा चुभने का दर्द भी कम होगा और कांटा अपने आप ही निकल जायेगा।

15- भुनी हुई हींग को रूई के फाहे में लपेटकर दाढ़ पर रखने से राहत मिलती है। दांत में कीडा लगने पर भी इससे आराम मिलता है।

16- हींग का धुआं सूंघने से हिचकियां बंद हो जाती हैं।

17- एसिडिटी की समस्या होने पर थोड़ी सी हींग को गुड़ में मिलाकर गरम पानी के साथ खा लें, इससे गैस से होने वाले दर्द में आराम मिल जायेगा।

18- पसलियों में दर्द होने पर हींग रामबाण की तरह से काम करता है।ऐसे में हींग को गरम पानी में घोलकर लेप लगाएं, सूखने पर प्रक्रिया दोहराएं। आराम मिलेगा।

19-पेट में दर्द व ऐंठन होने पर अजवाइन और काले नमक नमक के साथ हींग का सेवन करने से दर्द में काफी फायदा मिल जाता है।

20- प्रसव के उपरांत हींग का सेवन करने से गर्भाशय की शुद्धि होती है और उस महिला को पेट संबंधी कोई परेशानी नहीं होती है।

21- जोडों के दर्द में इसका नियमित सेवन बहुत ही लाभदायक रहता है।

22- माइग्रेन और सिरदर्द में आधा कप पानी में हींग मिलाकर पीने से आराम मिलता है।'

200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर

कनार्टक में आर्य समाज हुमनाबाद द्वारा 50 कुंडीय वैदिक मानव कल्याण यज्ञ

आर्य समाज जैसा श्रेष्ठ संगठन संसार में कोई नहीं – विनय आर्य, महामन्त्री

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर कर्नाटक के उत्तर में स्थित बीदर जिले के आर्य समाज हुमनानाबाद द्वारा 50 हवन कुंडों पर 200 यजमानों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की। ज्ञात हो कि यह वही क्षेत्र है जहां आर्य समाज के महापुरुषों ने हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध जब देश की एकता और अखंडता को लेकर सत्याग्रह का आंदोलन चलाकर के एक नवजागरण की लहर पैदा की थी, उस विपरीत वातावरण में आर्य समाज के महान बलिदानियों के तप, त्याग, साधना और बलिदान से प्रेरित होकर वहां के लोगों ने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज की विचारधारा को अपनाया था। तब से लेकर अब तक वहां राष्ट्र और मानव सेवा के क्षेत्र में अनेक सेवा कार्य निरंतर किए जा रहे हैं।

22 दिसंबर 2024 को आर्य समाज हुमनानाबाद, बीदर कर्नाटक द्वारा 50 कुंडीय यज्ञ में श्री ज्ञानराज महाराज जी के सानिध्य में श्री रेणुका गंगाधर शिवाचार्य जी के निर्देशन में पवित्र वेद मंत्रों से आहुति देकर 200 यजमानों ने विश्व कल्याण की कामना की। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी उपस्थित रहे और उन्होंने आर्य समाज के महापुरुषों के बलिदान को स्मरण तथा नमन करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि आर्य समाज जैसा श्रेष्ठ संगठन संसार में नहीं है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य श्री देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात थे। पंडित सुखपाल आर्य, भजन उपदेशक सहारनपुर ने मधुर भजनों से सभी को लाभ प्रदान किया। मुख्य संयोजक श्री सुभाष अष्टिकर जी ने सुंदर कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाया। इस अवसर पर श्री नारायण एस चंद्र जी और अनेक अन्य क्षेत्रीय महानुभाव उपस्थित रहे। ध्वजारोहण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन वृत, उनके विचार, शिक्षाओं और आर्य समाज के सेवा कार्यों को लेकर विशेष चिंतन मनन किया गया और भविष्य में आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए संकल्प लिए गए। पूरा कार्यक्रम प्रेम सौहार्द के वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे द्वारा लिखित 'उपनिषद् संक्षिप्त भाष्य' का विमोचन

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र द्वारा 1 दिसम्बर 2024 को सभा मुख्यालय आर्य समाज परली वैजनाथ में महाराष्ट्र प्रान्त के आर्य कार्यकर्ताओं के लिए एक चेतना जागृति शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे द्वारा लिखित उपनिषद् संक्षिप्त भाष्य पुस्तक का विमोचन किया गया। इस पुस्तक का सम्पादन पाणिनि महाविद्यालय रेवली सोनीपत हरियाणा के आचार्य श्री प्रदीप कुमार जी ने किया तथा प्रकाशन रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली सोनीपत हरियाणा द्वारा किया गया है। डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने अबतक वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित अनेकों पुस्तकें लिखी है वे आर्यजगत् के जाने-माने लेखक, कवि वक्ता है। विमोचन के अवसर पर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रा. श्री अर्जुनराव सोमवंशी उपप्रधान वेलानी जी, उपप्रधान दयाराम बसैय्येजी श्री शंकरराव मोरे आदि पदाधिकारियों सहित महाराष्ट्र के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे। – ***मन्त्री***

आर्य समाज का अमर सन्देश

धरती से उठी, आसमान को छूती,
एक मशाल थी जो हवा से न रूठी।
150 बरस से जल रही है ये बाती,
ज्ञान की राहें हर अंधेरा मिटाती।

दयानंद का सपना, सत्य का नारा,
आर्य समाज बना, जग का सहारा।
हर दिल में बसे, हर जुबां पर गाए,
शिक्षा की जोत, हर कोना जगाए।

जहां रूढ़ियां थी, वहां सोच जगी,
जहां अंधेरा था, वहां रौशनी बसी।
विद्या का सूरज, हर दिशा में चमके,
आर्य समाज का गीत हर दिल में धड़के।

सेवा का मर्म, हर कर्म में उतारा,
धर्म का अर्थ, जग को समझाया।
150 बरस का ये सफर जो चला,
हर पीढ़ी को बस उजाले में ढला।

चलो फिर से जलाएं, वो दीपक की लौ,
जलती रहे, अंतिम श्वास जब तक तन में हो।
आर्य समाज का ये अमर संदेश सदा रहे,
हर युग में आर्यों का भगवा ध्वज लहलाता रहे

वेद मंत्रों की ध्वनि से ये गगन गूंजता रहे,
भारत विश्व गुरु बन सबको राह दिखाता रहे।।

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष पर आर्य युवा समाज हरिद्वार-उत्तराखण्ड द्वारा

'नमामि गंगे घाट' पर 5100 कुण्डों पर किए राष्ट्रभृत महायज्ञ से रचा इतिहास

आधुनिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक संस्कारों से होगा सर्वांगीण विकास – योगी सूरी

हरिद्वार के पवित्र '**नमामि गंगे घाट**' 5100 कुण्डीय राष्ट्रभृत महायज्ञ सफलता पूर्वक आयोजित किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष एवं आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित यह महायज्ञ उत्तराखण्ड राज्य के आर्य युवा समाज एव समस्त डी.ए.वी विद्यालयों के 5100 छात्र-छात्राओं, अभिभावको एवं शिक्षकों ने इस पुण्य कार्य में भाग लिया।

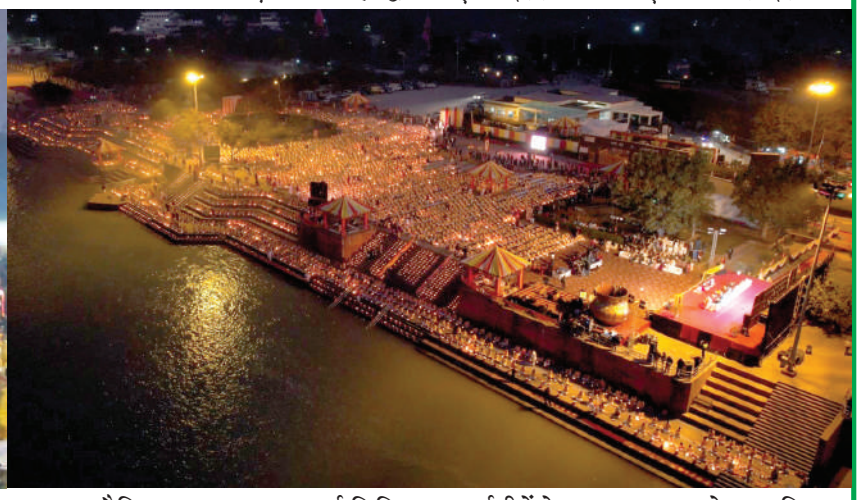

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य युवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री योगी सूरी जी ने की। उनकी सहधर्मिणी श्रीमती प्रिया जी ने भी उपस्थित रही। हरिद्वार के जिलाधिकारी श्री कर्मेंद्र सिंह जी आई.ए.एस. इस अवसर विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का विधिवत् आरंभ देहरादून डी.ए.वी. विद्यालय से पधारे छात्रों के द्वारा प्रस्तुत गायत्री महिमा एवं ईशभक्ति के गीत से हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश के अधयक्ष एवं वैदिक मोहन आश्रम के सचिव डॉ. वी. सिंह जी ने योगी सूरी जी, उनकी धर्मपत्नी एवं मंचस्थ अतिथियों का स्वागत करते हुए महायज्ञ पर उद्बोधन दिया। डॉ. वी सिंह ने सभी आर्यजनों को जागरूक होने का आवाहन किया।

आर्य युवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी ने '**नमामि गंगे**' का तीन बार उदघोष कर डी.ए.वी. विद्यालयों के विशिष्ट उद्देश्यों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि विज्ञान,गणित आदि आधुनिक विषयों के साथ-साथ आध्यात्मिक शिक्षा से प्रत्येक युवा छात्र को दीक्षित करना हमारा महान् लक्ष्य है। जब तक छात्र आध्यात्मिक शिक्षा से संस्कारित नहीं होगा तब तक उसका सर्वांगीण विकास असंभव है। श्री सूरी जी ने 5100 कुण्डीय महायज्ञ में प्रतिभागिता करने वाले सभी युवाओं को अपनी शुभकामनाएँ एवं अनंत अशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के माध्यम से मात्र 5100 छात्र नहीं अपितु 5100 परिवार वैदिक यज्ञ परंपरा एवं आर्य समाज से जुड रहे हैं। डी.ए.वी. मेरठ की संगीत शिक्षिका के द्वारा ईशभक्ति के भजन प्रस्तुत किए गए। गुरूकुल प्रभात आश्रम के यशस्वी स्नातक आचार्य गौरव निगमालंकार जी इस यज्ञ के ब्रह्मा बने। उनके साथ डी.ए.वी. के अन्य धर्माचार्य श्रीमती अनीता, श्री विवेक, श्री गिरीश जोशी, श्री हरीश शास्त्री भी मंत्र उच्चारण कर रहे थे। छात्रों ने विधिवत् यज्ञकुण्ड में अग्नि की स्थापना करते हुए यज्ञ प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। उस समय परिसर के कृत्रिम प्रकाश को कुछ समय के लिए बाधित किया गया।

'**नमामि गंगे घाट**' पर हुआ यह आयोजन विश्व कीर्तिमान के रूप में चिरकाल तक जाना जाएगा। सारा हरिद्वार इस अलौकिक दृश्य का आश्चर्य मिश्रित आनन्द ले रहा था। मंत्रों के उच्चारण की ध्वनि से देवभूमि हरिद्वारा देवलोक आभासित हो रहा था। कार्यक्रम अपने सुचारू रूप से चरमोत्कर्ष को प्राप्त हुआ।

यज्ञ प्रार्थना उपरांत यजमान छात्रों को सभी गणमान्य अतिथियों द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया गया।

यज्ञ-ब्रह्मा आचार्य गौरव द्वारा छात्रों, अतिथियों, गणमान्य विभूतियों, सभी शिक्षकों अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। '**नमामि गंगे घाट**' परिसर के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को भी धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

यह भव्य कार्यक्रम उत्तराखण्ड की क्षेत्रीय अधिकारी डॉं. अल्पना शर्मा की देखरेख और उनके अथक प्रयासों से संभव हुआ। उत्तराखण्ड के समस्त प्रधानाचार्यो एवं दिल्ली से आए आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने अपना अमूल्य योगदान दिया।

इस अवसर पर आर्य संन्यासी स्वामी नित्यानंद जी, माता सत्यप्रिया जी का आध्यात्मिक आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री एस. के. शर्मा एवं कोषाध्यक्ष ब्रिगेडियर ए.के. अद्लखा एवं डीएवी समिति की कोषाध्यक्षा श्रीमती जुनेश काकरिया ने इस अवसर पर अपनी उपस्थिति दर्ज की।

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ☆ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ☆

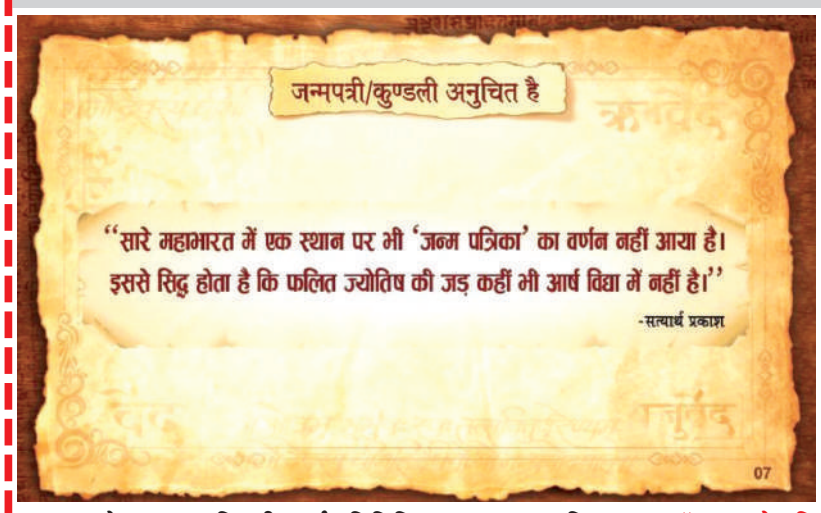

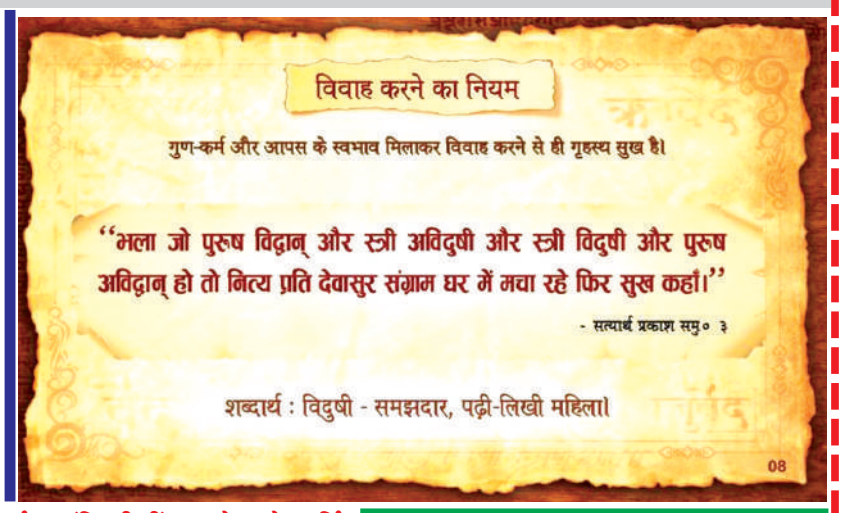

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे–

यह पत्र थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रधान की ओर से था। यह सोसाइटी 1875 ई॰ के नवम्बर मास की 17 तारीख को अमेरिका में स्थापित हुई थी। सोसाइटी की संस्थापना मैडम ब्लैवेट्स्की और कर्नल अल्कॉट के उद्योग से हुई थी। मैडम ब्लैवेट्स्की रूस में बसे एक जर्मन–परिवार में उत्पन्न हुई थी। 17 वर्ष की आयु में उसका एन.वी. ब्लैवेट्स्की के साथ विवाह हुआ। विवाह के तीन महीने बाद मैडम ब्लैवेट्स्की पति को छोड़कर भाग निकली। भागकर बरसों तक मैडम ने संदिग्ध जीवन व्यतीत किया, और पति के जीवित रहते ही मैट्रोविच नाम के एक पुरुष से सम्बन्ध स्थापित किया। बहुत समय तक नाम बदलकर और उसकी विवाहिता स्त्री की भांति बनकर मैडम ब्लैवेट्स्की मैट्रोविच के साथ रही। इसी सम्बन्ध से एक लड़का भी उत्पन्न हुआ, जिसके बारे में बाद में मैडम ने बहुत–सी आध्यात्मिक कल्पना करके लोगों को समझाने का यत्न किया। मैट्रोविच का साथ छोड़ने पर मैडम बहुत समय तक मिश्र की राजधानी काहिरा में रही। यहां पर मैडम को बहुत–से जादूगरों और जोगियों से मिलने का मौका मिला, जिनसे उसे चमत्कारों का रहस्य पता चला, और स्वयं भी बहुत–से हस्तलाघव करने लगी। 1873 में मैडम मिश्र से रूस आ गई, और आध्यात्मिक विद्या के विषय में लिखकर अपना निर्वाह करने लगी। मिश्र में सीखा हुआ जादू यहां मैडम के बहुत काम आया। Spiritualism पर लेख लिखकर वह अपनी पेट पालना कर लेती थी। 1875 के अप्रैल मास में मैडम ने माइकेल थैटले नाम के आर्मीनियन के साथ विवाह कर लिया था। इस विवाह के समय मैडम ने दो झूठ बोले। उसका पहला पति जीता था, तो भी उसने अपने को विधवा प्रसिद्ध करके दूसरे पुरुष से विवाह कर लिया। यह विवाह भी देर तक स्थिर न रह सका। शीघ्र ही दोनों में झगड़ा हो गया, और तलाक ने असत्य मूलक सम्बन्ध का विच्छेद कर दिया। रूस में बदनाम होकर मैडम ने अमेरिका में आश्रय लिया और आध्यात्मिक विद्या पर लेख लिखकर अपना निर्वाह जारी रखा। 1874 में मैडम का कर्नल अल्कॉट से परिचय हुआ। कर्नल अल्कॉट पहले सिपाही था, परन्तु उस समय एक समाचार पत्र के संवाददाता के रूप में एक आध्यात्मिक घटना की छानबीन में लगा हुआ था। दोनों आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा से निर्वाह करने वाले चिटण्डन नाम के नगर में मिले और मिलकर दोनों ने अनुभव किया कि हम एक–दूसरे के लिए आवश्यक हैं। दोनों ने मिलकर आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा को बढ़ाने का यत्न करने का निश्चय किया। दोनों पुस्तकें लिखते और उनकी आय से निर्वाह करते, परन्तु फिर भी अमेरिकन लोग उनके दिये हुए ज्ञान को इतना मूल्यवान् नहीं समझते थे कि उन ग्रन्थों से दोनों का गुजारा भली प्रकार हो सके। 18 जुलाई 1875 का मैडम का एक पत्र है जिसमें वह लिखती हैं–

"Here, you see, is my trouble. Tomorrow there will be nothing to eat. Something quite out the way must be invented. It is doubtful if Olcott's 'Miracle club' will help, I will fight to the last."

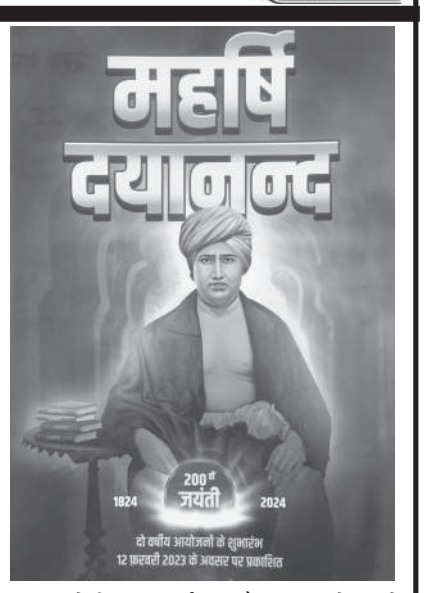

'मेरी कठिनाई यह है। कल के खाने के लिए कुछ नहीं है। कोई बिल्कुल नया ढंग बनाना चाहिए। यह संदिग्ध है कि अल्कॉट की चमत्कार सभा कुछ सहायता दे सकेगी। मैं आखिर तक लड़ूंगी।'

–**क्रमशः**

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Expansion of Arya Samaj

Who claims that he can destroy my soul! Until such a hero appears in this world, I am not even ready to think whether I should suppress the truth or not!'

Sorry readers for the long quote! This lecture of Rishi Dayanand is a good example of strength and fearlessness. The lectures had a deep impact on those who had the good fortune to listen to the sage. Rishi's speech was natural, there was no name of construction or elaborate language-making in it. Whatever it was, it was the feeling of the heart, the utterances of a fearless soul. This was the reason why the speech of the sage was always new, always entertaining and always instructive.

The sage was completely fearless. The events of his life prove beyond doubt that it was impossible for him to be troubled either physically or mentally. The word 'fear' was banished from his vocabulary.

In Bareilly, Rishi Dayanand had an argument with Pastor Scott. The discussion took place very peacefully. That had a great impact on the public. You used to work with great clarity in the debate, but never used to disturb the presented subject, the limits of civilization and truthfulness. Understanding the side of the opponent, understanding it in the right way and answering in a tactful way, these golden rules of Shastrarth were acceptable to Rishi Dayanand. They were not valid only in words, they were also fully valid in practice.

After Bareilly, the tour of the United Provinces continued for several months. In Shahjahanpur, Lucknow, Farruabad, Kanpur, Allahabad and Meerut, the sages continued to propagate religion. Where Arya Samaj was not formed, he used to establish it, and where the society had been established, he used to strengthen it. Religion-discussion-ceremony also continued to happen every where. From Meerut to Dehradun and from there again via Meerut, Swamiji reached Agra. Agra was the last city of Samyukta province, in which Rishi Dayanand established Aryasamaj by propagating religion. After taking farewell from Agra to Samyukta province, the sage moved towards Rajputana.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

परिणाम, मध्य एशिया इस्लामवाद की भीषण अग्नि में जल रहा है और सवाल बन रहा है कि क्या वह लोकतंत्र का शीतल रस पी सकेगा? शायद यह परिवर्तन अत्यंत पीड़ादायक और लंबा समय लेने वाला सिद्ध होगा। क्योंकि कैथोलिक चर्च का मध्ययुग में एक प्रतिक्रियावादी शक्ति से वर्तमान लोकतांत्रिक स्वरूप में विकास ही अभी तक जारी है, तो फिर मक्का का एक मजहब, जो कि अपने समस्या उत्पन्न करने वाले ग्रंथों से भरा पड़ा है, उससे कैसे उम्मीद करें?

अगर इन चीजों को भी छोड़ दे तो मुसलमानों ने शायद ही इस्लाम को आधुनिक बनाने के बारे में सोचा हो? सातवीं शताब्दी की व्यवस्था को पूरी तरह बदलकर उसे इक्कीसवीं सदी के पश्चिम प्रभावित सिद्धांतों के अनुकूल बनाने के बजाय आज का इस्लामवादी आंदोलन, जो कि मुस्लिम बुद्धिजीवी वर्ग को प्रभावित करता है, वह उसे लोकतंत्र से दूसरी ही दिशा में धकेल रहा है। इसके बजाय यह शरिया को पूरी तरह पुर्नजीवित करने के लिए और पूरी कठोरता से लागू करने के लिए संघर्ष कर रहा है। इसका एक सबसे बड़ा उदाहरण कश्मीर से ही लिया जाए तो वहां स्थानीय नागरिक, जिनमें जम्मू में हिंदू सिख बहुलता है, लद्दाख में बौद्ध मत को मानने वाले लोग, जबकि घाटी में इस्लाम को मानने वाले बहुसंख्या में हैं। जहाँ जम्मू और लद्दाख के नागरिक अपने मौलिक अधिकारों प्रति सजग हैं, राज्य में धर्म निरपेक्षता और लोकतंत्र के पक्षधर हैं, वहीं घाटी में अधिकांश लोग धर्म निरपेक्षता को नकारकर इस्लामी गणराज्य और शरिया के अनुसार शासन चाहते हैं, जिसके लिए वे हिंसा करने से भी नहीं चूकते हैं।

इन उपरोक्त उदहारण को देखकर कह सकते हैं कि छठी सदी में खाड़ी देशों में फैली मजहब की आग अभी तक जल रही है। सीरिया में युद्ध का अंत नहीं हुआ है। शायद अब हारे हुए शिया सत्ता के लिए सुन्नी शासक से युद्ध करेंगे क्योंकि दोनों ही एक–दूसरे की नजर में काफिर हैं और सभ्यताओं का दमन करने वाले आज खुद की लगाई नफरत की आग में खंडहर हो रहे हैं। हालात कुछ भी बने, आगे भविष्य जरूर तय करेगा कि शेष विश्व में इस्लाम जाएगा या लोकतंत्र मध्य एशिया में आएगा, चूँकि शरिया पश्चिमी संस्कृति के गंभीर पहलुओं से मेल नहीं खाती। इस्लामिक समूह लोकतंत्र को खारिज करता दिखेगा। इसका कारण यही है कि अरब का इस्लाम लोकतंत्र से चल ही नहीं सकता, वो तो मस्जिदों और मदरसों से चलता है और उसे राजा नहीं, प्रधानमंत्री नहीं, आतंकी संगठन और मुल्ला–मोलवी चलाते हैं, जिससे उन देशों के गरीबों को गरीब बनाकर रखा जाए ताकि उनका इस्लाम चलता रहे और अरब की आग जलती रहे। –**संपादक**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी नई दिल्ली–18

प्रधान	:	श्रीमती विनीता चावला
मन्त्री	:	कर्नल रमेशचन्द्र मदान
कोषाध्यक्ष	:	श्री वीरेन्द्र गोयल

प्रथम पृष्ठ का शेष

अत: हर वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव विक्रम संवत्सर को ही हमारा नववर्ष होता है, जिसे हम यज्ञादि करके मनाते हैं। लेकिन आजकल की युवा पीढ़ी को तो इसका अनुमान भी नहीं रहता और आज की युवा पीढ़ी अपने वास्तविक नववर्ष से अनजान पश्चिम का अनुकरण करती है।

इन भोले लोगों को यह भी पता नहीं है कि वास्तव में नव वर्ष कैसे मनाएं, जीवन में नवीनता कैसे लाएं, दुनिया में कोई ऐसी विधि तो नहीं है कि देर रात तक जागने, नाचने-गाने, आतिशबाजी करने और बुद्धि को भ्रष्ट करने वाले नशा आदि करने से उनके जीवन में नवीनता नहीं आएगी, बल्कि उससे तो जीवन में और अधिक उदासी, उबासी छा जाएगी।

हमारी वैदिक संस्कृति में हर दिन को एक नया सवेरा माना गया है और नवीनता का स्वागत करना हमारी परंपरा भी रही है। ऋग्वेद के नौवें मंडल के नौवें सूक्त का आठवां मंत्र संदेश दे रहा है।

नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथ:। प्रत्नवद्रोचया रुच:।।

हे मनुष्य, तू नित्य नए और अधिक नए मार्गों का निर्माण कर, नया काव्य, नया संगीत, नए नृत्यादियों से अपने जीवन को ऐसा नवीन और रुचिपूर्ण बना जैसे तेरे विद्वान पूर्वज बनाते आए हैं। मनुष्य का संपूर्ण अस्तित्व, उसके आयास प्रयास, शिक्षा-दीक्षा आदि समस्त क्रियाकलाप नवीनता में ही समाहित है। प्रत्येक नववर्ष भी उसी कड़ी का एक उपक्रम है। इसलिए वेद कह रहा है कि हे मनुष्य, तू नित नूतन होकर नए मार्गों का निर्माण कर, जैसे किसी अधखिली सुमन की कली के ऊपर ओस की बूंद और सूर्य की किरणें पड़ती है, उसमें ताजगी और खुशियों के रंग भर देती है, उसे नूतन नवीन बना देती है, वैसे ही मनुष्य को सदैव अपने जीवन में नवीनता को अपनाना चाहिए, नवीनता को स्वीकार करना चाहिए, जीवन में नवीनता के लिए हर पल अपने मन को नया बनाना चाहिए, पुराने को हटाएं, नई खोज, नई सोच, नया चिंतन, नया मनन, नई प्रार्थना से अपने हृदय को नूतन बनाना चाहिए। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं कि हम प्राचीन सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं को भूल जाएं, अपनी संस्कृति, संस्कारों को त्याग दें, बल्कि हर पल, हर क्षण अपने मन को सुमन बनाने के लिए अपने पूर्वजों के दिखाए रास्ते पर नए उत्साह के साथ आगे बढ़ें, मानव सेवा और परोपकार के कार्यों को नए-नए तरीकों को अपनाते हुए आगे बढ़ाएं। वेद मंत्रों के स्वाध्याय से नित नए विचारों को धारण करते हुए जीवन को गरिमा प्रदान करें। नया सोचें , नया खोजें, नया बोले और कुशलता पूर्वक नया कर्म करें, इससे जीवन में नवीनता आती है।

मंत्र में कहा गया कि हे मनुष्य, रोज नए मार्गों का निर्माण कर, इसका मतलब है कि प्रतिदिन कुछ नया करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए, जीवन को नवजीवन बनाने के लिए नई संभावनाएं, नई आकांक्षाएं, नई आशाएं, अपेक्षाएं मनुष्य के भीतर होनी ही चाहिए। क्योंकि नयापन सबको पसंद है, हमारा मन नित्य नई -नई कल्पनाएं करता है, मनुष्य को चाहिए कि अपने मन की झील और बुद्धि के सरोवर में उभरती हुई तरंगों को, कल्पनाओं को शुभ सात्विक बनाएं, जिससे जीवन में खुशियों का आगमन होता रहे, क्योंकि जैसी कल्पना होगी, वैसा ही तो जीवन होगा।

जनवरी-1 को नये वर्ष के रूप में मनाने की पद्धति को अंग्रेजियों ने भारत में भी सन् 1752 में आरम्भ करवाया। भारतीय परम्परा को नष्ट करने के लिए बहुत से षडयन्त्र करने पर भी विक्रम संवत्सर (Financial Year) और शिक्षा संवत्सर (Educational year) आज तक अप्रैल-1 से ही आरम्भ होते हैं। इन्हें वे बदल नहीं पाये। ये दोनों ही संवत्सर भारतीय नये संवत्सर के अनुकूल हैं, साथ में वैज्ञानिक और तर्क संगत हैं। पर अप्रैल-1 का मूर्खदिवस (Foolish Day) के रूप में प्रचलन कराया गया। इसका कारण यह है कि-सन् 1582 में फ्रांस के दसवें राजा 'चार्ल्स' ने अपने देश में जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में घोषणा की, पर वहां की जनता राजाज्ञा को स्वीकार न कर अप्रैल-1 को ही नया संवत्सर मनाती रही। इससे क्रुद्ध चार्ल्स ने राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले सभी को मूर्ख घोषित किया। उसके बाद धीरे-धीरे वहाँ की जनता को जनवरी-1 को संवत्सरादि के रूप में मानना पड़ा। इस सफलता को देखकर, पुन: भविष्य में कोई भी अप्रैल-1 को नया वर्ष न मनावें, इस उद्देश्य से चार्ल्स ने अप्रैल-1 को मूर्खदिवस के रूप में घोषणा करवाई। हम भारतीय इस सच्चाई को न जानते हुए जन्मान्धों के समान भेड़ चाल से उनका अनुकरण करते जा रहे हैं और बिना किसी राजाज्ञा के ही खुशी से, आनन्द से दूसरे को अप्रैल-फूल (मूर्ख) बनाते जा रहे हैं।

जरा विचार तो कीजिए - दिन का प्रारम्भ आधी रात को नहीं, अपितु सूर्योदय से तीन घण्टे पूर्व (3 A.M.) होता है। उसी समय पशु-पक्षी आदि जागकर अपनी मधुर ध्वनियों से सभी दिशाओं को मनोहर एवं श्रव्य बनाते हैं। उसी समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं। उसी समय सम्पूर्ण संसार में सक्रियता, क्रियाशीलता दिखाई देती है। प्राणियों के शरीरों में भी उसी समय एक विशिष्ट चैतन्य का संचार होता है। हम सुनते आये हैं और आयुर्वेदादि शास्त्र भी कहते हैं कि सभी मनुष्यों को इसी ब्रह्ममुहूर्त में जागना चाहिए। इस प्रकार यह जड़ जगत् पशु-पक्षी, महापुरुषों का अनुभव एवं शास्त्र यह प्रकट कर रहें हैं कि ब्रह्ममुहूर्त से दिन आरम्भ होता है। पर इसके विपरीत आधी रात को दिन का आरम्भ वा संवत्सर का आरम्भ मानना क्या अज्ञानता का प्रतीक नहीं है? मेधा सम्पन्न भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर पशु-पक्षियों से हीन अज्ञानियों के जैसा व्यवहार करना शोभा नहीं देता। यज्ञाग्नि को प्रज्वलित कर प्रकाश से प्रसन्न होकर अलौकिक आनन्दानुभूति करने की संस्कृति है हमारी। पर दीपकों को बुझाकर अन्धकार से प्रीति करने की सभ्यता है पाश्चात्यों की। चारों ओर घनघोर अन्धकार से आच्छादित आधी रात को मनुष्य ही नहीं, अपितु पशु-पक्षी आदि भी गहरी नींद में रहते हैं। कहीं भी चेतनता, क्रियाशीलता नहीं दिखती। ऐसे समय में नव वर्ष का आरम्भ मानना अज्ञान एवं अविवेकता है, विज्ञान के विरूद्ध है। नव वर्ष के दिन का मध्यरात्रि से दिन आरम्भ होने का वर्णन किसी भी शास्त्र में नहीं है। अत: भारतमाता के हे वीर सपूतों जागो, सचेत हो जाओ, विचार करो और अपने वैदिक नव वर्ष को मनाने का संकल्प लेकर जीवन को गरिमा प्रदान करें।- ***सम्पादक***

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098
Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री ऋषिराज वर्मा जी को मातृशोक

आर्यसमाज राधापुरी, दिल्ली के प्रधान श्री ऋषिराज वर्मा जी की पूज्य माता एवं आर्यसमाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती शीलादेवी वर्मा जी का दिनांक 12 दिसम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 दिसम्बर, 2024 को आर्यसमाज प्रीत विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री दयानन्द यादव जी का निधन

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के पूर्व मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष श्री दयानन्द यादव जी का दिनांक 23 दिसम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। वे काफी लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थें। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ नोएडा में सम्पन्न हुआ।

श्री शंकरलाल आर्य जी का निधन

आर्यसमाज मोलरबन्द विस्तार, बदरपुर नई दिल्ली के उप प्रधान श्री शंकर लाल आर्य जी का दिनांक 24 दिसम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के सम्पन्न हुआ।

माता विमला सहगल जी का निधन

स्त्री आर्यसमाज उत्तम नगर, नई दिल्ली की प्रधाना श्रीमती विमला सहगल जी का दिनांक 23 नवम्बर, 2024 को लगभग 96 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

⑧ साप्ताहिक **आर्य सन्देश**

सोमवार 23 दिसम्बर, 2024 से रविवार 29 दिसम्बर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 26-27-28/12/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 25, दिसम्बर, 2024

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार, 4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद, सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

विश्वभर में आर्यसमाज की लहराती पताकाओं को दर्शाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित

आर्यसमाजें अधिकाधिक सख्या में अपने नाम से छपवाकर प्रचार करें

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

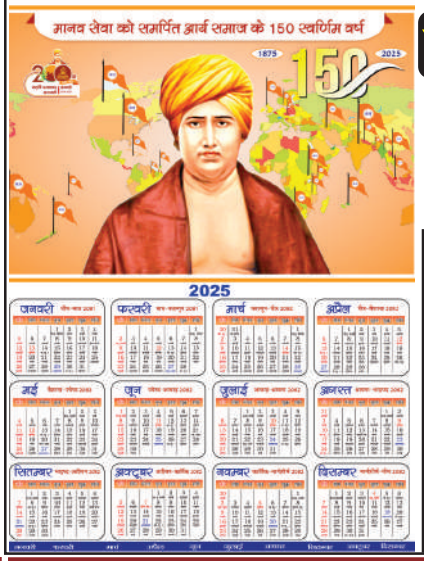

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें

www.vedicprakashan.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह